मालियात की परेशानिया के अस्बाब: १

तकरीबात मंगनी और शादी

हिन्दी और ગુજરાતી में

मुफ्ती महमूद सुलेमान बारडोली दा.ब.

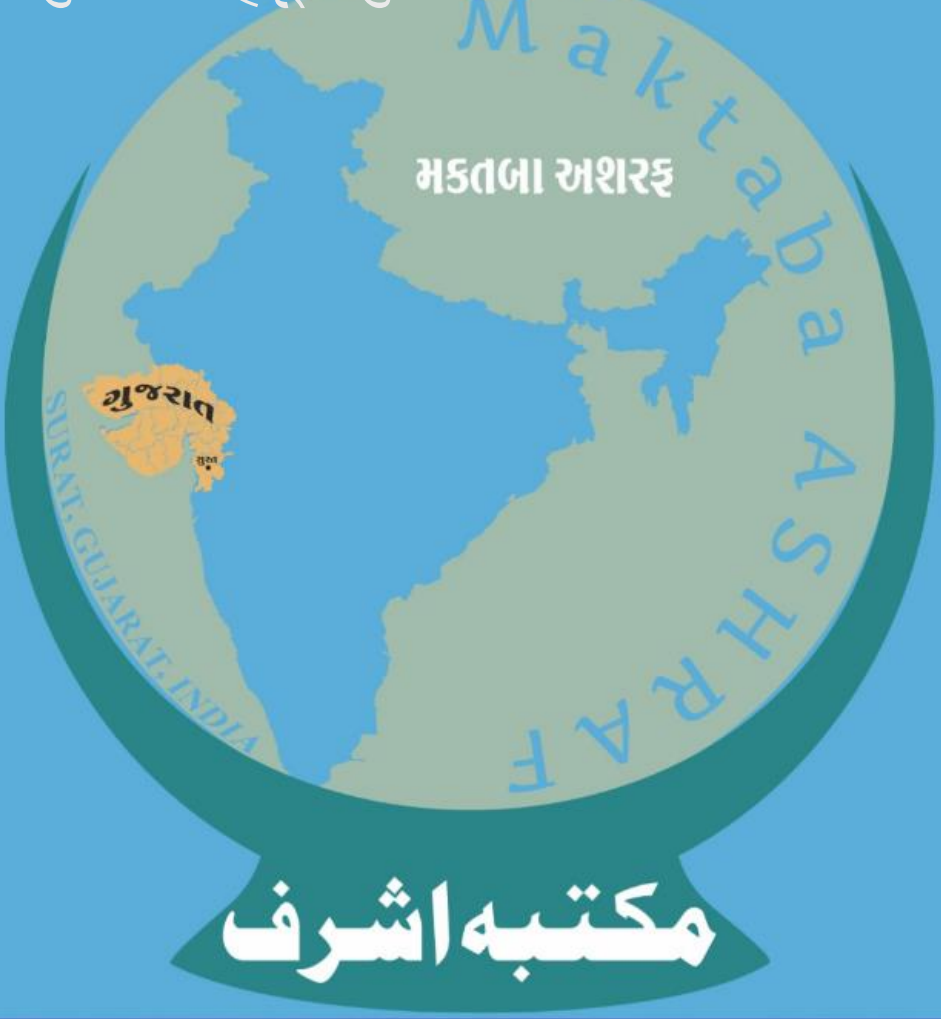

नोट: आप से दरखास्त है की इसे भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे

ગુજરાતી
ક્લિક કરો

हिन्दी
क्लिक करो

मालियात की परेशानिया के अस्बाब: १

तकरीबात मंगनी और शादी

✍ मुफ्ती महमूद सुलेमान बारडोली दा.ब.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नहमदुहु वनुसल्ली अला रसूलीहिल करीम,

अम्माबाद.

मालियात की परेशानिया दूर करने की चीजे: अल्लाह वाले फरमाते हे के आज के हालात मे इख्राजात को कंट्रोल मे रखना बहोत जरूरी हे बल्के एहतियात और एतेदाल को अप्ने से इन्शाअल्लाह मालियात की परेशानिया दूर हो जायेगी.

नंबर-१: तकरीबात यानी जिसको प्रसंग केहते हे जैसे मंगनी, शादी, वगैरा का मोका हो यह सब तकरीबात केहलाती हे ऐसे मोको पर इख्राजात पर कंट्रोल रखो.

१. मंगनी

मंगनी हमारी शरीयत मे कोइ खास एहम चीज नही हे उसको बढा-चढा कर रस्म बना कर ख्वाहमख्वाह हमने चला रखा हे. मेरे मुर्शिदे मुफती अहमद खानपूरी दा.ब. फरमाते हे के मंगनी के लिये अरबी मे खित्बाह का लफज इस्तेमाल होता हे जिसका तरजुमा पैगाम देना हे चाहे लडके वालो की तरफ से या लडकी वालो की तरफ से दूसरी तरफ वाले को निकाह और शादी के लिये जो रिश्ता किया जाये वह मंगनी हे. निकाह-शादी का वादा कर देना यह मंगनी हे अब उसमे कोइ खास तरीके से लडका, लडकी एक दूसरे को मिठाइ खिलाये एक दूसरे को अंगुठी पेहनाये बडी दावत करे मजलिस की जाये रिश्तेदारो को जमा करे यह हमारी शरीयत के मिजाज के बिल्कुल खिलाफ हे उसमे से बाज चीजे तो इसाइ तेहजीब हे इस्लामी तरीका नही हे.

मंगनी के मोके पर लेन देन: हमारे यहा मंगनी के मोके पर लडके वालो की तरफ से लडकी को कपडे वगैरा चीजे दी जाती हे उसको मंगनी का चढावा केहते हे यह मंगनी की एक तरह की रस्म हो गइ हे उस्से भी बचना चाहिये. मंगनी के वकत या बाद मे लडके को होने वाले ससुराल वालो की तरफ से घडी वगैरा चीजे देने का रिवाज बन गया हे उसको जरूरी भी समजा जाता हे, इद वगैरा खुशी के मोके पर होने वाले दामाद को बुलाया जाता हे दावत की जाती हे तोहफे पेश किये जाते हे उसको भी जरूरी समज कर करते हे यह भी एक गलत रिवाज हे हां बगैर इस किस्म के रिवाजो की पाबंदी के कुछ हदिया दोनो तरफ से या एक तरफ से दिया जाये और उसको जरूरी ना समजे और वापस मांगने या लेने की निय्यत नहो तो उसकी गुंजाइस निकल सकती हे.

मंगनी मे होने वाली खराबियां: मंगनी के

बाद लोग अपनी लडकी के होने वाले दामाद के साथ मिलने देते हे या बातचीत करने देते हे फोन पर कोन्टेकट करने देते हे दावत दे कर बुलाते हे फिर लडके लडकी को मिलने दिया जाता हे तन्हाइ मे बात करने दी जाती हे घूमने के लिये भेजा-जाता हे यह सब इस्लामी शरीयत के खिलाफ हे लोग मंगनी को हाफ-मेरेज समजते हे इसी बुनीयाद पर लडके लडकी को ताल्लुक की इजाजत दी जाती हे हाला के यह नाजाइज और हराम हे जिसमे हाथ पांव आंख कान का जिना होता हे और मां-बाप अगर जान बूज कर उन्को मिलने देगे तो मां-बाप भी अल्लाह के यहा गुनेहगार होगे अल्लाह को जवाब भी देना पडेगा. हकीकत यह हे के मंगनी के बाद लडका लडकी एक दूसरे से मिले यह नाजइज हे अफसोस तो यह हे के बहोत सी जगहो पर तो मंगनी के बाद लडके लडकी टूर-तफरी पर साथ जते हे यह भी गुनाह का काम

हे इस्से अपने आपको बचावो शरीयत मे इसका कोइ खास मकाम नही हे.

२. शादी

इस्के बाद शादी का नंबर आता हे कितने गुनाह हमारी शादीयो मे होते हे कितनी हराम चीजे होती हे. शादी मे गुनाह और हराम चीजे आयेगी तो शादी के बाद की जिंदगी मे खैर व-बरकत नही होगी शादीयो को सादी बनावो बडी बडी दावतो के चक्करो मे मत पडो शादी की रूह सादगी पर हे सादगी वाली शादीयो मे बडी बरकत हे. हदीस शरीफ मे हे सबसे जियादा बरकत वाली वह शादी हे जिसमे कम से कम खर्च किया जाये.

शादी एक जरूरत हे: हमारे दीन मे हमारे मजीहब मे शादी एक जरूरत हे जैसे खाना-पानी एक जरूरत हे इसी तरह शादी भी एक जरूरत हे और जरूरत को जरूरत के तरीके से पूरा करना चाहिये आप सोचिये हम जीब रोज

आना खाना खाते हे तो कया हम अपने खाने से पेहले एलान करते हे? कार्ड छपवाते हे के आज मे खाना-खा रहा हूं. जिस तरह हम जरूरत के वकत मे अपना खाना-खा लेते हे अपना पानी-पी लेते हे दूसरी अपनी जरूरत पूरी करते हे इस तरह निकाह और शादी भी एक जरूरत हे और उसको मामूल के मुताबिक की आम जिंदगी की तरह सुन्नत तरीके से कर लेना चाहिये. जैसे अगर इस्तिन्जा की जरूरत पडती हे बडा हो या छोटा कया कभी आपने यह देखा के किसी को इस्तिन्जा की जरूरत हुइ और उसने कार्ड छपवा कर दूसरो को इत्तिला दी के मे इस्तिन्जा करने जा रहा हूं. बल्के हम उम्दा अल्फाज और मुनासिब ताबीर इख्तियार करते हे जैसे मे फारिग हो कर आता हूं.

शादीयो के दावतनामे: शादीयो मे दावत देने के लिये शानदार कीमती दावतनामे छपवाये जाते हे यह फुजूलखरची की एक किस्म हे

खूबसूरत और खास अंदाज के वेडिंगकार्ड और वह भी एक की कीमत ५० से १०० रूपिये तक के होते हे अंदाजा लगावो अगर एक हजार दावतनामे छपवाये तो सिरफ ५० हजार या एक लाख रूपिये तो दावतनामे पर ही खरच हो गये जिसमे किसी गरीब की शादी हो सकती हे इस लिये इस गलत तरीके को छोड दो.

शादी और कर्ज: बहोत सी मरतबा ऐसा होता हे के शादी के लिये हम लोग कर्ज लेते हे दूसरो के पास कर्ज मांगते हे और जो गरीब लोग होते हे वो लोगो के पास जा कर के शादी के वास्ते जकात सदका वगैरा की रकम मांगते हे यह भी मुनासिब नही हे और कर्ज लेकर बडी शादी करना भी मुनासिब नही हे.

शैतान की चालाकियां: शैतान बडा खतरनाक हे अजिब अजिब रास्ते से शैतान आता हे मेरे उस्ताद मवलाना इब्राहीम पटनी मद्दे जिल्लाहुल आली ने फरमाया जब हमारे घर मे

पेहली शादी का मोका आता हे तो शैतान आकर के यूं केहता हे के यह तो पेहला मोका हे, हमने सबके यहा दावत खाइ तो सबको खिलाना पडेग पेहली शादी मे कुछ खर्चा करलो और फिर जब दूसरी शादी आती हे तो शैतान यह कहता हे के पेहली लडकी के लिये किया हे तो अब दूसरी के लिये नही करेगे तो दूसरी लडकी को बुरा लग जायेगा मेरे अब्बा ने मेरी शादी पर कोइ बडा खर्च नही किया फिर जब आखरी लडका या लडकी होती हे तो हम यह सोचते हे के अब तो हम सब अवलाद की शादी से फारिग हो रहे हे चलो अब आखरी शादी का मोका हे इस लिये कुछ खर्चा कर लो. इस तरह शैतान हमको ऐसी ऐसी बाते सिखलाता हे और हर शादी पर बडे खर्चे करवाता हे. इस लिये पेहला हो या आखरी हो बीच वाला हो कोइ भी हो हमे आप सल्लल्लाहु अलयही वसल्लम की सुन्नत की निय्यत से बिल्कुल सादा निकाह करे

इन्शाअल्लाह, अल्लाह हमारी शादीयो मे खैर और बरकत अता फरमायेंगे.

शादी के लिये दुल्हन का जोडा: हमारे बाज मुसलमान वेडिंग ड्रेस मे हजारों रूपिये खर्च करते हे ऐसा नही होना चाहिये यह तो जिंदगी मे एक बार पहेनना होता हे फिर उसको कोइ पहेनता नही और उसमे इतने लंबे खर्चे कया माना रखता हे आज हकीकत यह हे के नइ फेशन के मुताबिक कइ कइ जोडे कपडे सिलाये जाते हे फिर हर जोडे के साथ मुनासिब रंग का जुता मुनासिब तरज के जेवरात तैयार करवायें जाते हे. शादी का ड्रेस ३० से ५० हजार का होता हे यह फुजूलखर्ची नही तो और कया हे और शैतान का भाइ बन कर अल्लाह को नाराज करने के सिवा और कया हे. हमारे बुजरूगो ने इस्के लिये उम्दह तरतीब बताया के एक उम्दह जोडा तैयार करवा कर रख दिया जाये बिरादरी मे बस्ती मे मोहल्ले मे जिस लडकी की

भी शादी हो वह उसको पेहने फिर उसको वापस कर दे, इस तरह एक जोडा कइ दुल्हनों को काम आवे.

अल्लाह ने माल दूसरो को दिखलाने के लिये नही दिया: अल्लाह ने पैसा इस लिये नही दिया के हम उसकी नुमाइश करे आज हमने शादीयो को पैसों की नुमाइश करने की चीज बना ली हे दौलत अल्लाह ने दी उसको अच्छे काम मे खर्च करो शादी, मंगनी के करिये से उसकी नुमाइश मत करो. आज हमने शादीयो को माल ओ दौलत को नुमाइश का जरिया बना दिया हे मालदारी दिखाने का जरिया बना रखा हे कितने अफसोस की बात हे ये दिखाने की चीज नही हे.

दौलत और औरत: एक बुजरूर्ग फरमाते हे के दौलत और औरत किसी को दिखाने की चीज नही वरना फित्ने मे मुब्तला होने का खतरा हे अपनी दौलत को दिखावोगे तो चोरी का खतरा

हो जायेगा और अब तो इनकम-टेकस का जो शोबा हे वो भी शादीयो पर नजर रखते हे, और तुम्हारी औरत को किसीने देख ली और उसके हुस्न पर फिदा हो गया तो उसमे भी बडे फित्ने आ सकते हे और आ रहे हे इस लिये हंमेशा दौलत और औरत को छुपा कर रखने मे खैर हे.

शादीयो मे होने वाली बुराइया: बडी खतरनाक बात यह भी हे के हमारे यहा शादीयो मे हमारी दीनी बेहने बहोत अच्छे अच्छे शानदार कपडे पहेन कर आती हे और बेपरदा आती हे या शादी मे आकर के परदा उतार देती हे और वहा पर मर्द भी आते जाते हे मेहरम गैर मेहरम का कोइ फर्क बाकी नही रहता हंसी मजाक गाने गीत वगैरा यह सब चीजे चलती हे. कितने दुख की बात है के एक तो हमने खर्चा किया मेहनत की, पैसा लगाया और साथ मे इतना बडा नुकसान के हमारी शादी की बरकत खत्म हो जाये. हमसे बडा पागल कोन होगा के

हम अपना पैसा खर्च कर के अपनी शादी की बरकत खत्म कर दें यह तो हमारे लिये बहोत बडे नुकसान की बात है इस लिये अपने निकाह को अपने घरो की शादीयो की बरकतो को बाकी रखो और याद रखो जहा भी बडी दावत होगी वहा मजमे को काबू मे नही कर सकोगे चाहे कितना भी एहतेमाम कर लो के मर्द के लिये अलग जगाह है औरत के लिये अलग जगाह है लेकिन शादीयो मे काबू पाना बहोत मुशकिल हो जाती है इस लिये हम ऐसी बडी बडी शादियां ही ना करे और सादगी वाली शादिया करे तो इन्शाअल्लाहुल अज्जि हराम से हमारी हिफाजत होगी हमारी शादीयो मे बरकत बाकी रहेगी.

शादी और नमाज: शादीयो मे नमाज कोन पढता हे खाने मे खिलाने मे हशी मजाक मे लोग लगे रहते हे मर्द भी नमाज नही पढते और बेहनें भी नमाज नही पढती. अल्लाह के एक नेक बंदे

ने फरमाया के जिस शादी मे किसी की नमाज कजा हो गइ तो उस शादी की तमाम बरकतें खत्म हो जाती हे जिस निकाह और शादी की वजह से किसीकी नमाज कजा हो जाये नमाज छूट जाये उस शादी की तमाम बरकते खत्म हो जाती हे. हमारे यहा जो रिवाज हे के बेचारी दुल्हन को तैयार कर के कब से बिठा देते हे अब वो ऐसी बन-ठन के बेठ जाती हे के नमाज भी नही पढती उसकी सहेलियां करीब मे बेठ जाती हे यह बहोत गलत तरीका हे शादी का दिन हो रूख्सती का दिन हो कोइ भी दिन हो हमारे लिये नमाज फर्ज हे कोइ नमाज हमारी माफ नही होती हे इस लिये दुल्हनों को भी नमाज पढावो और जो भी शादी के वकत पर दो चार औरते सहेलियां आती हे उन्से भी नमाज पढने के लिये कहो किसी की भी फर्ज नमाज हमारी शादी की वजह से छूट ना जाये इसका खुसूसी ख्याल रखो.

शादीयो मे हुस्न की नुमाइश: बहोत सारे मां-बाप अपने जवान बेटों-बेटियों को शादीयो मे इस निय्यत से भेजते हे के दूसरे लडके या लडकियां उसको देखें और उसको पसंद करे गोया हमारी शादियां आज इन्तिखाबी मेला बन रहे हे सिलेकशन फंकशन बन रहे हे जवान लडकियां बन-ठन कर इसी निय्यत से शादी मे शरीक होती हे और नवजवान लडके भी खास दिलचस्पी से शरीक होते हे जहां औरतें खाना खा रही हो वहां जवान लडके बिला जरूरत गश्त लगायेंगे गोया औरतो के मजमे मे खाना खिलाने के लिये खुद्दाम की कोइ कमी नही होती और मर्दो के मजमे के लिये खुद्दाम तलाश करना पडते हे यह निहायत ही गलत बात हे जिम्मेदार हजरात इस पर खुसूसी तवज्जुह दें के जहां औरतें खाना खा रही हो वहां मुकम्मल पर्दे का नीजम हो वहां पर सिर्फ औरतें ही खिदमत अंजम देवे और मर्दों के मजमे मर्द हो वहा कोइ

औरत नहो नीज इस शादीयो से हराम ताल्लुकात की इब्तिदा होती हे और जिना तक वुजूद मे आते हे, इस लिये अपनी जवान लडकियों को शादी वगैरा मे आजाद और बेपरदा भेजना हराम हे.

शादी और तस्वीर: शादीयो मे फोटो ली जाती हे मुबाइल पर फोटो लेते हे और वोट्सएप पर उसको भेजती हे. यह तो इतना खतरनाक गुनाह हे के दुल्हन को सजाकर उसकी फोटो लेवे फिर फेसबुक पर रखे वोट्सएप पर भेजे. कया यह हमारे दीन की तालीम हे के किसी औरत के हुस्नो जमाल और जिनत को हम इस तरह शाये करे? इस तरह लोगो के दरमियान मे जाहिर करे तौबा अस्तगफिरूल्लाह. हदीष मे आता हे के कयामत के दिन तस्वीर खीचने वाले जहन्नम की आग मे डाले जायेंगे अल्लाह उन्को फरमायेंगे इस तस्वीर मे जान डालो रूह डालो और अगर वो रूह नही डाल सके तो उन्को

जहन्नम की सजा दी जायेगी. आज तक शादीयो के मोके पर लोग सादा केमेरे से फोटो खिंचवाते थे लेकिन अब मोबाइल मे फोटो और वीडीयो का जमाना आ गया पूरी शादी की शुटिंग होती हे निकाह की मजलिस को भी उसमे ले लेते हे यह सब गलत काम हे, यह सब शैतानी चक्कर हे जिससे तौबा की जरूरत हे.

शादी और म्यूजिक: शादीयो मे गाना होता हे होते हे हमारी बेहने गीत गाती हे गाने गाती हे तौबा अस्तगफिरूल्लाह. हदीष मे आता हे आप सल्लल्लाहु अलयही वसल्लम ने इर्शाद फरमाया जिसका खुलासा हे के जिस तरह पानी गिरता हे और जमीन पर खेती उगती हे इसी तरह गानों से दिल मे निफाक उगता हे यानी जैसे पानी से खेती उगती हे इसी तरह गाने बजाने से बेइमानी पैदा होती हे. हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्उद (रदि) के एक फरमान का खुलासा हे के गाना सुनने से जिना वुजूद मे

आता हे और आज कल यह चीज खूब देखने मे आ रही हे. एक हदीष का मजमून हे के आप सल्लल्लाहु अलयही वसल्लम ने इर्शाद फरमाया मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब के नाम बदल कर पीयेंगे उन्के सामने गाना बजाने के सामान के साथ औरतों का नाचना होगा अल्लाह उन्को जमीन मे धंसा देगे और कुछ की सूरतें बदल कर बंदर और सुव्वर बना देगे. इस लिये आप अपने को गाने और गीत वगैरा से बचावो.

सो शहीदों का सवाब: हम हदीष सुनते रहते हे फित्ने और फसाद के जमाने मे एक सुन्नत को जिंदा करने मे सो शहीदों का सवाब हे सादे निकाह वाली यह सुन्नत आज उम्मत मे से धीर-धीरे खत्म हो रही हे आवो निय्यत कर के हमारे घरों की शादियां आप सल्लल्लाहु अलयही वसल्लम की सुन्नत के मुताबिक एक दम सिमपल होगी इसका पक्का इरादा कर लो.

शादीयो के बाद मियां-बीवी मे जागडे की एक वजह: आज हम अपनी शादीयो मे बहोत सारे काम शरीयत के खिलाफ करते हे जो बे-बरकती का बाइस हे हालाके शादी का दिन शादी वाली जिंदगी का पेहला मरहला हे अगर पेहले मरहले मे अल्लाह की नाफरमानिया शामिल हुइ तो फिर उसका बुरा असर शादी वाली जिंदगी पर मुरत्तब हो सकता हे लोगो का मिजाज ऐसा हो गया हे के शादी मे अल्लाह की नाफरमानियो की वजीह से जीब शादीवाली (जींदगी मे उंच-नीच होता हे तो हम सीधा जादू-जिन्नात को याद करना शुरू कर देते हे के किसी ने करवाया हे किसी ने पिला दिया हे वगैरा-वगैरा हालाके गुनाहो के बुरे असरात हे बहोत अच्छी तरह यह बात याद कर लो के शादी का मोका शादी वाली जिंदगी का पेहला मरहला हे अगर वह शरीयत सुन्नत और अल्लाह की मरजी के मुताबिक हो गइ तो

उसका अच्छा असर इन्शाअल्लाह पूरी जिंदगी पर होगा.

शादीयो मे सब राजि और अल्लाह की नाराजगी: आज हमारे यहा शादीयो मे सब रिश्तेदार अहले ताल्लुक को खुश करने की फिक्र होती हे जिनसे सालो साल से बोल चाल बंद हे ताल्लुकात कते हे उन्को भी दावत पर समजा कर बुलाया जाता हे. साथ ही घर मे छोटे बडे हर एक की चाहत के मुताबिक कपडे और जेवर का नीजम होता हे. सब राजी हो खुश हो सबकी चाहते पूरी हो उसका खास ख्याल रखा जाता हे. लेकिन अल्लाह नाराज हो रहे हे उसकी कोइ फिक्र नही हे. आप सल्लल्लाहु अलयही वसल्लम के मुबारक तरीको का जनाजा निकल रहा हे उसकी परवा नही हे. कोशिश यह करो के कोइ खुश हो नहो मेरा अल्लाह खुश हो जाये.

शादी और बारात: शादी मे बारात वगैरा से एतराज करो उसमे कइ गुनाह जामा हो जाते हे

मसलन मर्द औरत महरम और गेर महरम का साथ सफर करना नमाजों का कजा होना हंसी मजाक गाना बजाना वगैरा हकीकी बात यह हे के आज कल शादीयो की बारात भी काबिले बराअत (छुटकारे के लाइक) हो गइ हे. (यानी उस्से दूर रहा जाये बेजार रहें) बारात के लिये गाडियों का नीजम करने मे कितने रूपीये खर्च होते हे गोर करो इन बारात मे कितनी औरतें और मर्द नमाज की पाबंदी करते होगे कितनी औरतें पर्दे का लिहाज करती होगी ऐसी बारात से शादीयो को बरी और पाक करो उसी मे खैर हे. नियत करे इन्शाअल्लाह हम हमारी अवलादों की शादियां इस तरह करेगे जिस तरह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयही वसल्लम चाहते हे बिल्कुल सादगी और सुन्नत के मुताबिक और अपनी बेटी को सुसराल पहोचाने की फिक्र हम खुद ही करेगे यह भी साबित तरीका हे.

खुलासा: हकीकत यह हे के इन्सान की दीनदारी और कमाले तकवा का इम्तिहान तकरीबात के मोके पर होता हे और हमारे अकाबिर की जिंदगी मे वो हमको सीखने को मिलता हे, एक बुजरूग फरमाते हे के इबादत वाले इस्लाम पर अमल करने के लिये नमाज रोजा वगैरा अदा करने के लिये ५०० ग्राम इमान चाहिये तो मुआशरत वाले इस्लाम पर अमल करने के लिये ५ कीलो इमान चाहिये. सहीह बात यह हे के मुआशरत मुआमलात और अख्लाक दीन के वह शोबे हे जाहां इन्सान के इमान व इस्लाम का इम्तिहान होता हे. आपसे दरखास्त हे के जब भी कोइ शादी मंगनी वगैरा हो बिल्कुल सादी और सुन्नत और शरीयत के मुताबिक हो उसकी बरकत से इन्शाअल्लाह अल्लाह जिंदगी मे चेन और सुकून अता फरमायेगा.

हमारी शादीया गुनाहो का मजमुआ:

(१) कर्ज कर के या फुजूलखर्ची कर के महज दिखलावे के लिये बडी बडी दावतें की जाती हे. (२) मरडो और औरतो का आजादाना इख्तिलात होता हे. (३) नमाजों का छूट जाना या कजा हो जाना आम हो गया हे. (४) वीडीयो टी.वी. वगैरा का इस्तेमाल होता हे. (५) शादी के गीत गाये जाते हे. (६) मर्दो और औरतो का मख्लूत गैर शरइ सफर होता हे. (७) दूसरो की तहकीर और खुद नुमाइ होती हे. (८) इसराफ और फुजूलखर्ची से कमरे की सजावत की जाती हे. (९) शादी के बाद तफरीह के पीछे खर्च जिसे हनीमून का नाम दे कर बुरा भी नही समजते. (१०) शादीयो मे जरूरी समज कर हदिया देना के उसने हमारी शादी मे दिया था लिहाजा हम उन्को भी देवे वरना लोग ताना देगे या अभी उन्को हदिया दो शादी के मोके से तो आइन्दा वह हमारे यहा शादी मे ईस्से (जीयादा हदिया दे. (११) हमको उन्होने दावत दी हम भी

उन्को दावत देवे या अभी हम उन्को दावत दे ताके आइन्दा वह हमको दावत दे. (१२) बाज जगहो पर बडी मिकदार मे महर दी जाती हे या दहेज का समान दिया जाता हे उसके लिये कर्जे किया जाती हे इसी तरह उसमे रियाकारी भी होती हे और फिर उसकी नुमाइस भी की जाती हे.

अल्लाह मुजे आप को और पूरी उम्मत को सच्ची समज अता फरमाए और सुन्नत तरीके से शादी करने की तौफीक और सादत नसीब फरमाए. आमीन.

व आखिरु दअवना अनिल हम्दुलिल्लाहि रब्बील आलमीन.

हवाला: दीनी बयानात भाग १ और ६ में से मजमून का खुलासा